जीवन में जलता रहे सप्त दीप...

ज़िन्दगी में सुख शांति की इच्छा सबको होती है। दिवाली आती है तो उस इच्छा को और ही तीव्र वेग मिलता है। लेकिन सदा ही दिवाली हो तो कितना अच्छा! ऐसा संभव हो सकता है? कहते हैं, असंभव कुछ भी नहीं है। मन है तो ऊँची उड़ान भी हो सकती है। दृढ़ संकल्प के साथ पुरुषार्थ करने वाले को हिमालय भी अवरोध पैदा नहीं करता। हाँ,

उसके लिए जागरुकता पूर्वक आयोजन कर निरंतर प्रयत्न करते रहना पड़े। ज़िन्दगी में हर पल, हर दिन दिवाली हो सकती है, उसके लिए सप्त दीपों का हमारे जीवन में सदा जलते रहना ज़रूरी है।

एक है श्रद्धा और विश्वास दीप। मुझे परमात्मा ने इस सृष्टि पर मनुष्य के रूप में भेजा और सबकुछ, सर्व शक्तियाँ, सम्पूर्ण ज्ञान सहित मैं इस धरा पर आया। उसपर मुझे पूर्व विश्वास रखना चाहिए और आत्म-विश्वास को सदा बनाये रखना और स्वयं के ऊपर पूर्ण निश्चय रख परमात्म प्रदत्त शक्तियों का प्रयोजन करने रहना चाहिए।

दूसरा है शक्ति दीप। शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक शक्तियों को सही दिशा में और सही रीति से इस्तेमाल करते रहना पड़े। सद् आचरण, संयम, सतसंग, व्यायाम, शुद्ध सात्विक खुराक, सकारात्मक दृष्टिकोण, अच्छी आदतें और नियमित रूप से ज्ञान का चिंतन अत्यंत आवश्यक है। अगर आलस्य के चपेट में आ गये, तो सद-इच्छायें भी पूरी नहीं हो पायेंगी।

तीसरा है विवेक और संयम दीप। शक्तियों का व्यय किस तरीके से करना है, ये जानते हुए भी अंधा बन जाना, कुसंग या खराब आदत, लोभ-लालच में फँस जाने जैसी अनेक बातों में संयम और विवेक का उपयोग करके आगे बढ़ते रहना चाहिए। कहते हैं, समझ के प्रयोजन से सुख मिलता है, पैसे से नहीं। दृढ़ संकल्प करेंगे तो कोई भी चीज़ें आपको फँसा नहीं पायेंगी।

चौथा है ज्ञान-विज्ञान दीप। ज्ञान और विज्ञान प्राप्त कर स्वयं को गढ़ते रहना चाहिए। जीवन में ज्ञान और विज्ञान दोनों की बहुत आवश्यकता है। संकुचितता को छोड़ते जाना और विशालता को प्राप्त करते जाना होगा। क्योंकि हर चीज़ परिवर्तनशील है, उसे उसी रूप में स्वीकार कर आगे बढ़ना होगा।

पाँचवा है सृजनात्मक प्रवृत्ति दीप। जीवन में हर पल को आनंद से भर लेना, ये प्रवृत्ति बनानी होगी। क्योंकि जीवन अनमोल है, इसीलिए उसे मौज के साथ जीना है। नई-नई चीज़ों को, नये-नये अंदाज़ से, नये-नये ढंग से सोचना और अपने आपको खुश रखना, ऐसी सृजनात्मक प्रवृत्ति को अपनाकर आगे बढ़ना होगा।

छठा है सकारात्मक दीप। निराशाजनक विचारों को छोड़ना और सकारात्मक रवैये को अपनाना और ऐसे चिंतन में रहना कि शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ बनकर रहें।

सातवाँ है प्रसन्न और संतोष दीप। प्रसन्न रहना...खुश रहना...चिन्ता रहित बनना, ये हमारे जीवन का लक्ष्य हो। स्वभाव में सौम्यता धारण करना, मन में हर्षोल्लास बनाये रहेंगे तो हज़ारों नुकसान से बचे रहेंगे। आपके आसपास के हज़ारों दिल तंदुरुस्त रहें, ऐसी कामना करते रहना और खुद आनंद में और प्रसन्न रहकर संतुष्ट रहना। ऐसी प्रवृत्ति से आपको सारा जग आनंदमय लगेगा।

आओ दीप जलायें मन में,
जग कर जग में फैलायें उजियारा।
प्रसन्नता की खुशबू बिखरे सब के दिल में,
फिर निर्मल बन जाये जहाँ ये सारा।।

मन का दमन नहीं...

- पेज 2 का शेष

सन्मार्ग पर चलेंगी। उत्तेजना दूर करना, ये तो मन की वृत्तियों पर लगी हुई चमक हटाने के बराबर है, बाकी वृत्तियाँ तो वैसी की वैसी बरकरार ही रहती हैं। उत्तेजना के लिए दो बातें समझने जैसी है। उत्तेजना वृत्ति के आधार पर जीती है। यदि वृत्ति पर वार किया जाये तो उत्तेजना आपके शरण में आयेगी। वो उत्तेजना पसंदीदा भोजन के लिए चारो ओर भटकती रहेगी। उसकी स्वादेन्द्रिय को सिद्ध करने के लिए मीठे-मीठे ज़ायके के बारे में ज़्यादा से ज़्यादा ढूंढ़ती रहेगी। वो कामेच्छा को तृप्त करने के लिए एक के बाद एक व्यक्ति को ढूंढ़ता रहेगा। जिसके साथ कोई वैर होता है तो मनुष्य उत्तेजित होकर उसके ऊपर क्रोधित होकर धुआँ-फुआँ करेगा, मन उत्तेजना को जितना प्रोत्साहन देता है, उतना ही समय उसे उत्तेजना को ठंडा करने में लगेगा। उत्तेजित मन तुरंत ही शांत नहीं हो जाता, धीरे-धीरे वो शांत होता है। यानि कि व्यक्ति को उत्तेजना के प्रसंगों पर वार करना चाहिए। कौन सी घटना बनती है जिससे मैं क्रोधित हो जाता हूँ। ये समझकर ऐसी घटनाओं से दूर रहना चाहिए और यदि फिर भी उत्तेजित हो जाते हैं तो उसके बारे में विचार करना चाहिए। इसलिए ऐसी उत्तेजना को समझे नहीं, तो साधना की कोई भी बात हो नहीं सकती। कई लोग ऐसे कहते हैं कि आप अपनी इंद्रियों का दमन करो। आँखें विषय के पीछे पागल बन गई हों, तो संत सूरदास की तरह आँखें फोड़ दो। कान यदि कोलाहल में डूब गये हों, तो सुनना पूर्ण रूप से बंद कर दो और मौन धारण कर लो। लेकिन इस तरह से करने से इंद्रियों का दमन होगा, वृत्तियों का समन नहीं होगा। इसका अर्थ ये है कि इंद्रियों में जगती वृत्ति को दबाना जरूरी नहीं है। मन में जगती भौतिक इच्छाओं पर शास्त्रों को लेकर टूट पड़ने की ज़रूरत नहीं है। तप या त्याग के द्वारा उसे खत्म करने की .ज़रूरत नहीं है। उसके बदले ज़रूरत है, बाह्य दुनिया में डूबी हुई इंद्रियों को आंतरिक दुनिया में ले जाने की। यहाँ साधक के लिए पुरुषार्थ की बहुत आवश्यकता है। मानव को, निरंतर पुरुषार्थ कर इन बाह्य इंद्रियों को मोड़कर स्वयं द्वारा भीतर के आनंद को प्राप्त कर सकता हूँ, ऐसे स्वयं से संवाद करना चाहिए।

वो ही कर्नेन्द्रिय आपको कोलाहल के बजाय अनहद का नाद सुनायेगी। व्यर्थ बातों या गपशप के बदले सतसंगों में जाकर श्रवण करने का भाव जगायेगी। आपकी आँखें जगत की सुंदरता देखने की नई सौंदर्यानुभूति करायेगी। इंद्रियों को थोड़ा सा अंदर की तरफ मोड़ेंगे तो धीरे धीरे चमत्कार अनुभव होगा। पहला काम है आत्मा को पहचानना और उससे भी ज़्यादा महत्व का काम है कि जीवन के केन्द्र में इंद्रियों के बदले आत्मा को स्थान देना। उसके लिए सिर्फ और सिर्फ आत्मा की महिमा करने से कुछ नहीं होगा, हमारी आत्मा शुद्ध, बुद्ध, निर्विकार और चेतन स्वरूप है, ऐसा बारंबार बोलते रहने से कुछ नहीं होता, बल्कि हमें स्थूलता को देखने की वृत्तियों को सूक्ष्म रूप से देखना पड़ेगा और उसे मोड़ना पड़ेगा। तो देखो, इस तरह से अगर करेंगे तो कितना मज़ा आयेगा! ज़रा इंद्रियों को मोड़कर उसे समझने की कोशिश तो करें! आपकी इन्द्रियाँ ही आपको परमानंद तक पहुँचा देंगी!

हाथरस-उ.प्र.। 'पुलिस प्रशासन एवं जनसहभागिता सम्मेलन' में दीप प्रज्वलित करते हुए कृषि विपणन एवं महिला कल्याण राज्यमंत्री स्वाती सिंह, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. शान्ता तथा अन्य।

बड़ी पटन देवी कॉलोनी-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन पश्चात् पटना की मेयर सीता साहू को चुनरी ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु. रानी।

कोटा-राज.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए कोटा ओपन युनिवर्सिटी के वाइस चांसलर पी.के. दशोरा, यू.आई.टी. के चेयरमैन राम कुमार वर्मा, ब्र.कु. उर्मिला तथा अन्य।

मथुरा-उ.प्र.। 'एकाग्रता की शक्ति का विकास' विषयक कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सविता,माउण्ट आबू, ब्र.कु. कृष्णा, ब्र.कु. मनोज, ब्र.कु. किशन लाल, फाइनेंशियल ऑफिसर आलोक, स्टेट ऑफिसर यतिन, डी.जी.एम.जी.,एम.पी.सी.एस. ब्रज बिहारी कुशवाहा तथा अन्य प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आई.ओ.सी.एल. के अधिकारीगण।

सिवान-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए अपर समाहर्ता कुमार रामानुजम, डी.पी.ओ. विजय शंकर, उप-निर्वाचन पदाधिकारी श्रीनिवास, ए.डी.पी.ओ. प्रमोद कुमार, ब्र.कु. सुधा तथा अन्य।

मेहम-हरियाणा। गवर्नमेंट हाई स्कूल में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. चेतना, प्रिन्सीपल श्रीमति शारदा तथा स्टाफ।